“ हमारा वज़ूद तथा सफलता.....”

डॉ. अविनाश कुमार लाल
98261 80561,79875 13646
avis.lall@gmail.com

तू खुद की खोज में निकल...

तू खुद की खोज में
निकल..
तू खुद की खोज में
निकल...
तू किस लिए हताश
है,
तू चल,तेरे वज़ूद की
समय को तलाश
है...

जो तुझ में लिपटी बेड़ियाँ
समझ न इसको वस्त्र तू,
जो तुझ लिपटी बेड़ियाँ
समझ न इसको वस्त्र तू,
बना ले इसको शस्त्र तू
बना ले इसको शस्त्र तू
तू खुद की खोज में
निकल.....

चरित्र जब पवित्र है
तो क्यों है,ये दशा तेरी,
चरित्र जब पवित्र है
तो क्यों है, ये दशा तेरी,
ये पापियों को हक़ नहीं
की ले परीक्षा तेरी
की ले परीक्षा तेरी
तू खुद की खोज में
निकल...

मैं.....
कौन जाने कौन हूँ... मैं,
शोर शराबे,हंसी ठहाकों के बीच
जाने क्यों मौन हूँ, मैं
कुछ ऐसी जो शांत है,
कुछ वैसी जो बंदिशों से आक्रांत है,
औरों से कुछ अनजाना
है...भीतर कुछ मनमाना,
शायद,
मैं बंद मुठ्ठी नहीं
चारदीवारों में बंद नहीं
चुप सी चुप्पी नहीं,
बस कुछ खुलना बाकी है,
छिटक न जाऊं खुद से मैं,
मलाल न रह जाए कंही
भ्रमजाल में उलझ न जाऊं कंही,
इसलिए वज़ूद
तलाशती मैं..... कौन हूँ... ?

“अपने वज़ूद को पहचानो....”

हमारी पहचान.....

यदि **GOAL** को पाना है,

तो सबसे पहले हमे खुद को जनाना होगा

WHO AM I....?

“तुम पृथ्वी के नमक हो; परन्तु यदि नमक का स्वाद बिगड़ जाए, तो वह फिर किस वस्तु से नमकीन किया जाएगा? फिर वह किसी काम का नहीं, केवल इस के कि बाहर फेंका जाए और मनुष्यों के पैरों तले रौंदा जाए।”

हमारी पहचान क्या है....
हमे कैसा होना चाहिये....
जैसा नमक को कैसा होना चाहिये.....
नमकीन...या...कड़वा...या... मीठा ,
कोई फ्लेवर युक्त जैसे स्ट्राबेरी,
पाईनऐप्प्ल,रोज़,लेमन, वैनीला..आदि आदि.... नशे मे डुबे हुये,शराब, सिगरेट, पाऊच,घमन्ड, दिखावा, नेट की लत
(मोबाईल,गेम,WHATSAPP,FACEBOOK)
फिर नमक किस काम का....केवल इसके कि फेका जाये
पैरो तले रोन्दा जाये.....

BLACK (KHADA) SALT SALTY

COSTLY (MAHNGA)SALT SALTY

CHEAP (SASTA) SALT SALTY

IODIZED/ FINE SALT SALTY

PACKED SALT SALTY
(Govt. or Pvt.)

जब इतने सब स्तरो से हो कर भी नमक अपनी नमकीनी नही दूर कर पाया और इसी लिये आज भी वह महत्वपूर्ण है...फिर....फिर.फिर हम अपने Youth, Student होने को, अपनी पहचान को कैसे खो दे रहे है...फिर इसके की कुचला जाये और फेन्का जाये...

केवल इसके की बहार फेंका जाए और मनुष्यो के पैरो तले रौंदा जाए

UNDER FOOT OF WORLD

काक चेष्टा, बको ध्यानं,
स्वान निद्रा तथैव च ।
अल्पहारी, गृहत्यागी,
विद्यार्थी पंच लक्षणं ॥

हिन्दी भावार्थ:

एक विद्यार्थी मे यह पांच लक्षण होने चाहिए..
कौवे की तरह जानने की चेष्टा,
बगुले की तरह ध्यान,
कुत्ते की तरह सोना / निंद्रा
अल्पाहारी, आवश्यकतानुसार खाने वाला
और गृह-त्यागी होना चाहिए

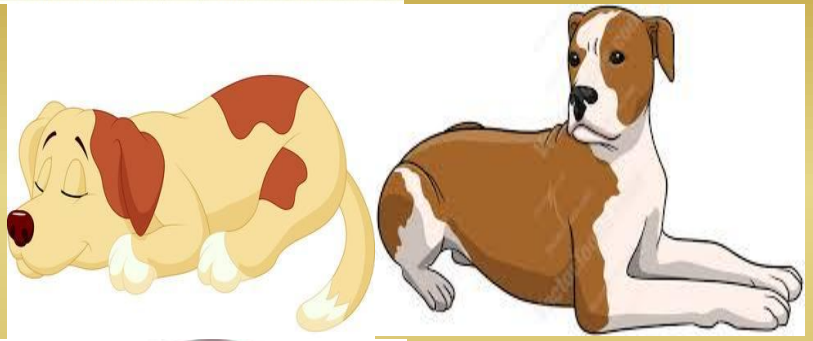

पांच लक्षण...

1.आपको प्रतिबद्ध{ Committed } होना चाहिए..

2. अगर आप प्रतिबद्धः है, तो पूरा ब्रह्माण्ड आपके साथ है..

3. खुद पर विश्वास करना अपने आप में सफलता की कुंजी है...

4. सबसे बड़ा गुलाम वो है,जो सोचता है की वो गैरजरूरी है...

5. एकाग्रता,ध्यान,माइंडफुलनेस आपको प्रबुध { Enlightened} बनाता है...

आपको प्रतिबद्ध{ Committed } होना चाहिए..

एक लकड़हारे का बेटा जब ठान लिया फिर उसने अमेरिका का राष्ट्रपति बन के दिखा दिया...

निराश महसूस करने से अच्छा है, की उठो और ठान लो की कुछ करना है..

यदि कल फिसलना नहीं है, तो आज अभी खुद से खुद को बरगलाने से अच्छा है की सच बोलो..

आपके भीतर वो जगह है, जंहा सब कुछ संभव है,जरूरत है, उस जगह को खोजे मतलब अपने आप को खोजे...और कमिटेड हो की कुछ कर गुजरना है...

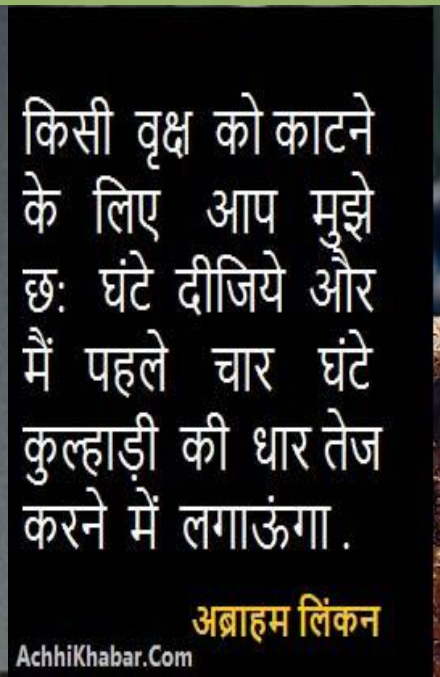

अगर आप प्रतिबद्ध: है, तो पूरा ब्रह्माण्ड आपके साथ है

www.webdunia.com

पर यदि आप खुद में कमिटेड नहीं तो आप सबसे बड़े खुद के दुश्मन हो...

एक बुराई जो संबंधों में आग लगा देती है,और जिसके कारण हमारे वज़ूद में भी प्रश्न चिन्ह लगा देता है...**DECRY { निन्दा करना,गल्ती निकालना }**

मैने पुछा चान्द से कि, तु इतना शीतल है, तु इतना मोहक है..फिर तुझमे दाग क्यो?

मैने पुछा गुलाब से कि, इतना खुशबू दार् है, तु इतना सुन्दर है, फिर तुझमे का`टा क्यो?

मैने पुछा कोयल से कि, तु इतनी सुमधुर है, तु इतनी सुरीली है,..फिर तु काली क्यो?

मैने पुछा ताज से तु इतना लुभावना है, तु तो दुनिया का आश्चर्य है, फिर तुझमे कब्र क्यो?

चारो ने कुछ सोचा विचारा...फिर मुझसे पुछा.....हे मानव, तु तो ईशवर की सर्वोत्तम रचना है, तुझमे दुसरे का अवगुण देखने का दुर्गूण क्यो?????

पहले अपनी आँखों का लठ्ठा निकालें फिर दूसरे की आँख का तिनका देंखे...

खुद पर विश्वास करना अपने आप में सफलता की कुंजी है...

DOUBT {संदेह, शक करना}

कहानी एक शरारती पहलवान/ हौसला और विश्वास से भरपुर नाई की

यह बात समझना कोई मुश्किल नहीं है क्योंकि, हमारे समक्ष ऐसे करोड़ों उदाहरण विद्यमान हैं, जिनको देखकर हमारे मुख से अचानक वाह-वाह निकल ही जाता है और कहीं -न-कहीं इससे हमारे अंदर भी अनंत शक्ति का संचार होता है. इसी तरह का एक उदाहरण है कि,

एक शरारती तत्त्व का पहलवान व्यक्ति अपना हौसला और अधिक बढ़ाने के लिए स्वामी विवेकानंद के पास जाना चाहता था पर, अपनी बहुत अधिक बढ़ी हुई दाढ़ी को लेकर स्वामी विवेकानंद के पास जाना नहीं चाहता था. वह एक नाई के पास गया और उसको कहा कि, "मेरी दाढ़ी बना दो, मैं तुम्हें दस हज़ार रुपए मेहनताना दूंगा पर, ध्यान रखना कि, एक भी कट न आने पाए, नहीं तो मैं तुम्हारा सिर काट दूंगा." नाई मरने के डरकर घबरा गया और उसने इंकार कर दिया. दूसरे नाई के पास गया और वहां भी नाई को दस हज़ार रुपयों का लालच तो आ गया लेकिन, वह भी मरने के डर से घबरा गया और उसने भी इंकार कर दिया. तीसरे नाई के पास गया. उसने सुन-समझ रखा था-

वह उस पहलवान की बात सुनकर एकदम राज़ी हो गया और बिना कट लगाए उसकी दाढ़ी बना दी. उसे मेहनताने के दस हज़ार से भी अधिक पंद्रह हज़र रुपए भी मिल गए. पहलवान ने उसे बताया कि, मैं पहले भी दो नाइयों के पास गया था लेकिन, दोनों ने मरने के डर से घबराकर इंकार कर दिया, तुझे मरने डर नहीं लगा? नाई ने बड़े हौसले से जवाब दिया, *"मुझे डरने की क्या ज़रूरत थी? उस्तरा तो मेरे हाथ में था, अगर कट लग जाता तो मैं उसी उस्तरे से आपका सिर काट देता."* शरारती पहलवान को लगा कि, मैं जिस उद्देश्य से स्वामी विवेकानंद के पास जाना चाहता था, वह उपदेश तो मुझे यहीं मिल गया. वह सीधा घर गया और शरारत और पहलवानी को छोड़कर मेहनत से सच के सौदे में लग गया. उसने समझ लिया था, कि खुद पे विश्वास ही सफलता की कुंजी है...

सबसे बड़ा गुलाम वो है,जो सोचता है की वो गैरजरूरी है...

Nature of Addiction in C.G. 2015~16

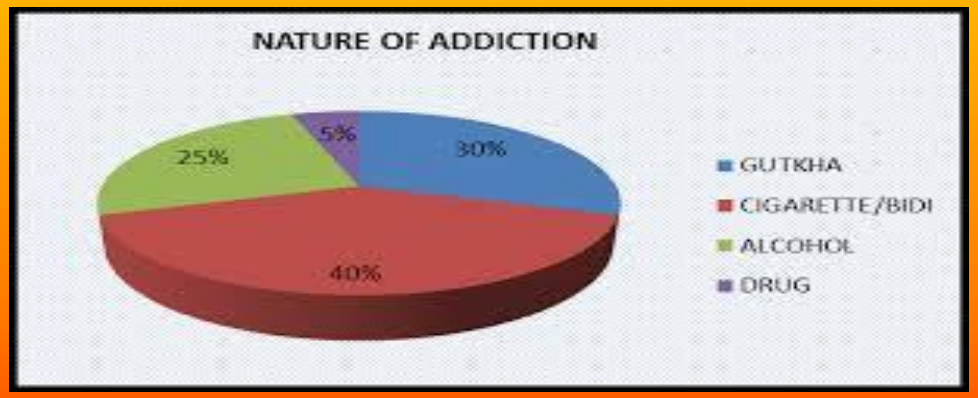

No ..Dear Papa, Bhaiya , Mummy, Friend ,Classmate, etc.

आप स्वयं नहीं एडिक्ट हो,अच्छी बात है....
पर आप शिक्षित तभी है, जब आप इसे रोक सकें,
पहले घर से,फिर अडौस पड़ौस में,फिर क्लास में,फिर समाज में....
आपकी भूमिका महत्वपूर्ण है,जरुरत है, पहल करने की...
बोलने की..बातचीत करने की...नहीं तो आप जीवन भर मन मसोस के रह जाओगे ये भी आप की गुलामी को दर्शाता है...

"अपने आप को आशाहीन [गैरजरुरी] समझना कोढ़ और तपेदिक से बुरी बीमारी है, और इस दुनिया मे सबसे छोटी सोच है " "MOTHER TERESA"

"आपकी आशाभरी मुस्कुराहट आपके चेहरे पर ईश्वर का हस्ताक्षर हैं,

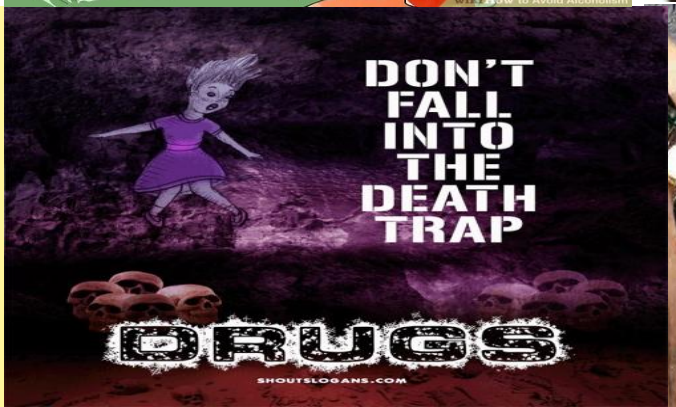

एकाग्रता,ध्यान,माइंडफुलनेस आपको प्रबुध { Enlightened} बनाता है...Sophisticated, Elite, Humbleness.

The weight of brain is 1300-1400 grams(3 pounds)

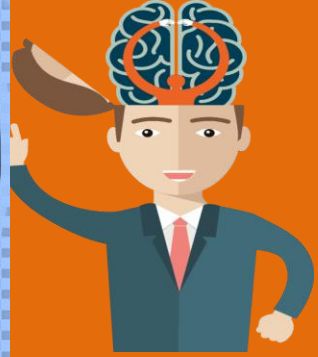

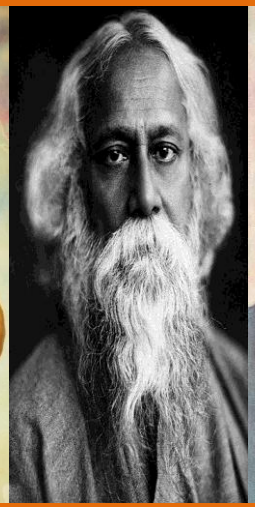
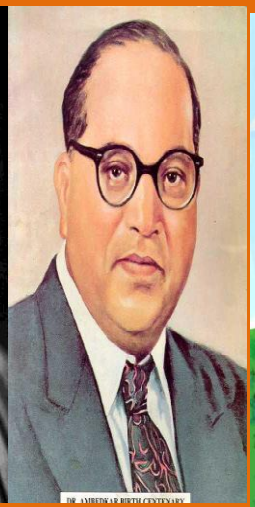

सर्वे बताती है की जितने भी उत्कृष्ट, विद्व्वान, प्रखर, तीक्ष्ण बुद्धि के व्यक्ति हुए है, वो अपने बुद्धि का केवल 3.5 से लेकर 4.75 परसेंट ही उपयोग करते है, फिर सोचिये की हम कितना....केवल की,गाइड,आई एम पी प्रश्न या और भी कोई शॉर्टकट...जुगाड़,तथकथित भैया जो यूनिवर्सिटी से प्रश्न ला देगा ...फंसा तो ठीक न फंसा तो...सारा कैरियर इन्ही दांव पेंच में रह जाता है..

Says these 5 Line To Your Self…. Every morning….

1.I am the BEST.

2.I CAN do it.

3.I am A WINNER.

4.Today Is MY DAY.

5.GOD is Always With Me.

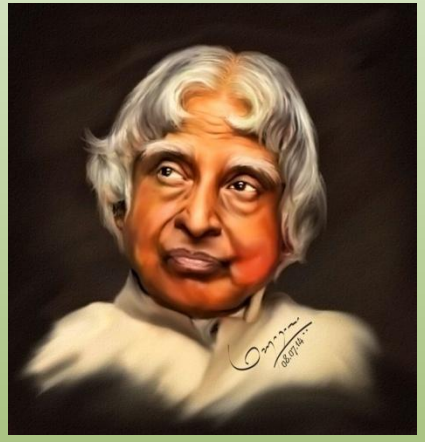

ईश्वर् की सारी रचना मे सबसे बुद्धिमान, विवेकशील, ताकतवार रचना हम हैं,फिर भी कभी कभी अयोग्य क्यों ? अयोग्यता कोई शब्द नहीं,कोई तर्क नहीं,आप खुद को जैसा समझेंगे वैसे हो जायेंगे,सबसे दुखद तो दूसरे को अयोग्य समझना घमंड रूपी अयोग्यता का सबसे बड़ा उदाहरण भी है, और हमारे लिये सीख भी, कि कुछ कर दिखाना है…

कोशिश तो करनी होगी और वो भी ईमानदार नीति व नियत के साथ,बिना कोशिश के तो चिड़ियोंको भी दाना नसीब नही होता

लक्ष्य से यदि नहीं भटकना है,

सामर्थवान,सफल,मानव बनना है,तो नींद,शिक्षा,वाणी,पानी,अन्न और संग पर नियंत्रण,संयम,संतुलन,और सामंजस्य अनिवार्य है.,अन्यथा दुत्कारे,नक्कारे जाने के अलावा कुछ नहीं रहेगा....

ईमानदार कोशिश से सफलता तो तय है,यदि असफल भी हुये तो आपकी ईमानदारी आपको हताश,निराश,कुंठित, तनावग्रस्त,नकलची,निंदक,आशाहीन,शक्तिहीन,शक्की,हतोत्साहित् और अयोग्य कभी नही बनाने देगी..

सारा प्यार,अनंत आशीष और अशेष शुभकामनाओ के साथ...

Prof. Avinash Lall

धन्यवाद !!!